Resource: अध्ययन नोट्स (बिब्लिका)

License Information

अध्ययन नोट्स (बिब्लिका) (Hindi) is based on: Biblica Study Notes, Biblica Inc., 2023, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

अध्ययन नोट्स (बिब्लिका)

EXO

निर्गमन 1:1–2:25, निर्गमन 3:1–6:30, निर्गमन 7:1–10:29, निर्गमन 11:1–13:16, निर्गमन 13:17–15:21, निर्गमन 15:22–18:27, निर्गमन 19:1–31:18, निर्गमन 32:1–35, निर्गमन 33:1–34:35, निर्गमन 35:1–40:38

निर्गमन 1:1–2:25

परमेश्वर ने उत्पत्ति में अब्राहम के साथ एक वाचा बांधी । इस वाचा में परमेश्वर ने अब्राहम को बहुत संतान और पोते-पोतियाँ देने का वादा किया। वे अनेक लोगों का राष्ट्र बन जायेंगे। उन्होंने उन्हें रहने के लिए कनान देश देने का वादा किया। और उन्होंने पृथ्वी पर सभी राष्ट्रों और लोगों के समूहों को उनके माध्यम से आशीष देने का वादा किया। निर्गमन दर्शाता है कि परमेश्वर का पहला वादा पूरा होना शुरू हो गया था। अब्राहम की वंशावली याकूब के माध्यम से बहुत बड़ी हो गई थी। मिस्र का नया फ़िरौन चिंतित था क्योंकि वहां बहुत सारे इस्राएली थे। इसलिए उसने उनसे गुलाम की तरह काम करवाया। बाद में उसने आदेश दिया कि इस्राएली परिवारों में जन्मे सभी पुरुष बच्चों को मार दिया जाए। लेकिन शिप्रा और पूआ ने बेटों को जन्म के समय बचाने में मदद की। ये वे महिलाएं थीं जो माताओं को जन्म देने में मदद करती थीं। और फिरौन की बेटी ने मूसा को नील नदी में मरने से बचाया।

निर्गमन 3:1–6:30

इस्राएली परमेश्वर के लोग थे। जब मूसा मिद्यान में थे, परमेश्वर ने उसे अपने लोगों को गुलामी से बाहर निकालने के लिए कहा। मूसा को उन्हें कनान देश में ले जाना था। इससे अब्राहम के साथ परमेश्वर की वाचा में उनका दूसरा वादा पूरा होगा। मूसा के मन में कई प्रश्न थे कि परमेश्वर कौन है। मूसा को भी कई संदेह थे। उसे नहीं लगा कि वह काम कर सकता है जो परमेश्वर ने उसे दिया था। परमेश्वर ने समझाया कि वह अब्राहम, इसहाक और याकूब के परमेश्वर है। उन्होंने अपने नाम के रूप में मैं हूँ शब्दों का उपयोग किया। परमेश्वर ने मूसा को चिन्ह और चमत्कार करने की शक्ति दी। इससे इस्राएलियों को विश्वास होता कि मूसा जो कह रहे थे वह सत्य है। इससे उन्हें विश्वास होता कि उनका अधिकार परमेश्वर से आया है। परमेश्वर ने मूसा को उसके भाई हारून को सहायक के रूप में भी दिया। इस्राएल के पुरनियों ने हारून को बोलते सुना और मूसा द्वारा किए गए चमत्कार देखे। उनका मानना था कि परमेश्वर उन्हें गुलामी से बचाएंगे और वे उसकी आराधना करते थे। फिरौन ने भी हारून को सुना और मूसा के चिन्ह देखे। लेकिन उसने विश्वास नहीं किया कि प्रभु सच्चा परमेश्वर है। उसने परमेश्वर के निर्देशों का पालन करने से इनकार कर दिया। इसके बजाय, उसने इस्राएलियों के साथ और भी बुरा व्यवहार किया। इस्राएलियों के लिए जीवन दुखों से भरा था। इससे मूसा और हारून पर विश्वास करना उनके लिए कठिन हो गया। उन्होंने विश्वास नहीं किया कि परमेश्वर मिस्र के खिलाफ न्याय लाएंगे।

निर्गमन 7:1–10:29

मिस्रियों के खिलाफ परमेश्वर का न्याय दस महामारियों के माध्यम से आया। परमेश्वर ने पहले तीन महामारीयों को हारून की छड़ी के माध्यम से लाएं। मिस्र के जादूगर भी पहली दो महामारियाँ कर सकते थे। उन्होंने यह जादू का उपयोग करके किया। लेकिन वे अन्य महामारीयों को नहीं ला सके। उन्होंने पहचाना कि केवल परमेश्वर ही इतनी सामर्थ रखते हैं कि वे उन महामारीयों को ला सकें। उन्होंने इसे परमेश्वर की सामर्थशाली उंगली के रूप में वर्णित किया। चौथी, पांचवीं और छठी महामारीयों के बाद, फिरौन ने लगभग इस्राएलियों को जाने दिया। लेकिन वह जिद्दी था और उसने अपना मन बदल लिया। परमेश्वर ने इस्राएलियों को गोशेन की भूमि में विपत्तियों से बचाया। यह फिरौन को दिखाने के लिए था कि परमेश्वर के पास पूर्ण शक्ति और अधिकार है। कुछ मिस्रियों ने इस पर विश्वास किया। उन्होंने परमेश्वर की आज्ञा मानी और मूसा का सम्मान किया। लेकिन फिरौन और कई अन्य लोग जिद्दी बने रहे। सातवीं, आठवीं और नौवीं महामारीयों ने मिस्र के अधिकांश हिस्से को नष्ट कर दिया और बहुत डर पैदा किया।

निर्गमन 11:1–13:16

निर्गमन 4:22–23 में परमेश्वर ने इस्राएल के लोगों को अपने सबसे बड़े पुत्र के समान वर्णित किया है। वह उनके पिता थे। फिरौन ने इस्राएल के साथ बुरा व्यवहार किया और लोगों को गुलामी से मुक्त करने से इनकार कर दिया। इसलिए परमेश्वर ने चेतावनी दी कि फिरौन के बड़े पुत्र को मार दिया

जाएगा। यह दसवीं महामारी में हुआ। हर मिस्री घराने में बड़े पुत्र की हत्या कर दी गई। यह उनके पशुधन में पैदा हुए पहले नर पशु के साथ भी हुआ। यह महामारी फिरौन के खिलाफ न्याय लाई। इसने यह भी दिखाया कि झूठे देवता मिस्रियों को बचाने की शक्ति नहीं रखते थे। लेकिन परमेश्वर का विनाशकारी दूत इस्राएलियों के घरों के ऊपर से गुजर गया। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि उन्होंने दरवाजों के चारों ओर मेम्ने का लहू लगाया था। इसके बाद, फिरौन ने पूरे इस्राएली समुदाय और उनके पशुओं को मिस्र से जाने दिया। परमेश्वर ने इस्राएलियों को दसवीं महामारी और निर्गमन को याद रखने के बारे में निर्देश दिए। उन्हें हर साल फसह के पर्व के माध्यम से इसका सम्मान करना था। उन्हें अपने सन्तानो को दसवीं महामारी और निर्गमन की कहानी सिखानी थी। उन्हें सबसे बड़े पुत्र और पशु को परमेश्वर को देना था। ये विशेष रूप से परमेश्वर के थे। अपनी माँ से पैदा हुए पहले नर पशु को बलिदान करना था। पशु को बड़े पुत्र के बजाय बलिदान किया गया था। इससे इस्राएलियों को याद रखने में मदद मिली कि परमेश्वर ने उन्हें दसवीं महामारी से कैसे बचाया था।

निर्गमन 13:17–15:21

फिरौन और मिस्र के शासक चाहते थे कि इस्राएली फिर से उनके गुलाम बन जाएं। जब इस्राएलियों ने मिस्र की सेना को अपना पीछा करते देखा तो वे बहुत डर गए। उन्होंने इच्छा की कि काश वे कभी मिस्र से न निकले होते। इससे पता चला कि उनके लिए स्वतंत्र लोगों के रूप में जीना कठिन था। परमेश्वर ने उन्हें गुलामी से बचाकर अनुग्रह दिखाया था। लेकिन वे अभी भी यह नहीं समझ पाए थे कि परमेश्वर कौन थे। वे यह नहीं समझ पाए कि वह अब्राहम के साथ अपने वाचा को निभाएंगे। जब परमेश्वर ने खुद को उनका उद्धारकर्ता के रूप में दिखाया तो उन्होंने परमेश्वर पर भरोसा करना शुरू कर दिया। परमेश्वर ने दिन में एक बादल के स्तंभ में इस्राएलियों की रक्षा की। उन्होंने रात में आग के स्तंभ में उनकी रक्षा की। सभी इस्राएली इन स्तंभों को देख सकते थे और जान सकते थे कि परमेश्वर उनके साथ थे। परमेश्वर ने उनके लिए लाल समुद्र को सुरक्षित रूप से पार करना संभव बनाया। उन्होंने देखा कि परमेश्वर ने मिस्रियों को कैसे नष्ट कर दिया। फिर मूसा और मिर्याम के साथ उन्होंने परमेश्वर के महान कार्य का जश्न मनाने के लिए गाना गाया और नृत्य किया।

निर्गमन 15:22–18:27

मरूभूमि में इस्राएलियों के लिए जीवन अलग था। उनके पास मिस्र की तरह का खाना और पीने के सामान नहीं थे। वे नहीं जानते थे कि आराम कैसे करें क्योंकि उन्होंने कई वर्षों तक गुलामों की तरह काम किया था। वे नहीं जानते थे कि आपस में व्यवस्था कैसे बनाए रखें। उन्होंने मूसा से कई बातों की शिकायत की। उन्होंने उन पर आरोप लगाया कि वह चाहता था कि वे भूख और प्यास से मर जाएँ। मूसा ने स्पष्ट किया कि वे परमेश्वर के विरुद्ध शिकायत कर रहे थे। लोगों को यह समझ में नहीं आया कि परमेश्वर ने उन्हें इसलिये बचाया क्योंकि वह उनसे बहुत प्रेम करते थे। वे यह नहीं समझते थे कि परमेश्वर उनके लिए प्रावधान करना चाहते थे। वे यह नहीं समझते थे कि उनके पास ज़रूरतें पूरी करने की सामर्थ थी। परमेश्वर ने इस्राएलियों के प्रति अपना प्रेम दिखाना जारी रखा, भले ही उन्होंने उनके खिलाफ बात की। उन्होंने उन्हें पीने के लिए पानी देकर दिखाया। उन्होंने बटेर और मन्ना के रूप में मांस और रोटी भेजकर दिखाया। उन्होंने हर हफ्ते सब्त के दिन उनके लिए आराम प्रदान किया। उन्होंने अमालेकियों के हमले के समय युद्ध में विजय प्रदान की। उन्होंने लोगों के बीच व्यवस्था बनाए रखने के लिए एक प्रणाली भी प्रदान की। यह बुद्धि मूसा को यित्रो की सलाह के माध्यम से आया।

निर्गमन 19:1–31:18

परमेश्वर ने सीनै पर्वत पर इस्राएलियों के साथ एक वाचा बाँधी। इसे सीनै पर्वत वाचा कहा गया। इसमें, उन्होंने खुद को उनका प्रभु और राजा के रूप में दिखाया। इस्राएली वे लोग थे जिन पर उन्होंने शासन किया। उन्हें वाचा में बताए गए तरीकों से उनकी सेवा करनी थी। परमेश्वर ने इन तरीकों को दस आज्ञाओं में स्पष्ट रूप से समझाया। उन्होंने कई अन्य नियम भी समझाए जिनका उन्हें पालन करना था। इन नियमों ने इस्राएलियों को गुलामी से मुक्त होने के बाद एक साथ रहने का तरीका सिखाया। इन नियमों ने उन्हें यह भी सिखाया कि एक मात्र परमेश्वर की आराधना कैसे करनी है। नियमों में याजकों, पवित्र तम्बू और बलिदानों के बारे में निर्देश शामिल थे। सभी नियमों को मिलाकर इन्हें मूसा की व्यवस्था कहा गया। परमेश्वर ने सीनै पर्वत को ढकने वाले घने बादल से मूसा से बात की। लोगों ने परमेश्वर को बोलते सुना। वे परमेश्वर से बहुत डरते थे। इसलिए मूसा परमेश्वर और लोगों के बीच मध्यस्थ था। इस्राएलियों ने परमेश्वर की वाचा के प्रति विश्वासयोग्य रहने पर सहमति व्यक्त की। यदि वे परमेश्वर की विश्वासयोगिता से सेवा करते, तो परमेश्वर ने उनके लिए कई चीजें करने का वादा किया। वह उन्हें याजकों का राज्य और एक पवित्र राष्ट्र बनाएंगे। इस प्रकार वे सभी अन्य लोगों को यह सच्चाई दिखाएंगे कि परमेश्वर कौन है। इस्राएलियों ने परमेश्वर के लिए पशुओं की बलि दी। मूसा ने लोगों पर पशुओं का लहू छिड़का। फिर लोगों के अगुवों ने परमेश्वर के सामने भोजन किया। परमेश्वर ने मूसा को पत्थर की पट्टियों पर वाचा की लिखित प्रति दी। इन सभी कार्यों का उद्देश्य वाचा को प्रभावी बनाना था।

निर्गमन 32:1–35

मूसा ने 40 दिन और 40 रातें परमेश्वर के साथ सीनै पर्वत पर बिताईं। उस समय, हारून ने एक झूठे देवता की मूर्ति बनाई। इस्राएलियों ने धातु के बछड़े को बलिदान चढ़ाया और उसको दण्डवत् किया। उन्होंने कहा कि बछड़ा वह देवता है जिसने उन्हें मिस्र की गुलामी से बचाया था। यह एक भयानक पाप था क्योंकि यह सच्चे परमेश्वर के बारे में एक झूठ था। इस्राएलियों ने एक मात्र परमेश्वर की आराधना करने का वादा किया था। लेकिन वे इसके विपरीत कर रहे थे जो उन्होंने करने का वादा किया था। इससे परमेश्वर बहुत दुखी और गुस्सा हो गए। उन्होंने इस्राएलियों को नष्ट करने का निर्णय लिया। इसके बजाय वह मूसा के वंशावली से एक नया राष्ट्र बनाएंगे। लेकिन एक बार फिर मूसा ने मध्यस्थ के रूप में कार्य किया। उन्होंने प्रार्थना (प्रार्थना) की कि परमेश्वर इस्राएल के लोगों पर दया करें। मूसा ने पत्थर की तख्तियों को तोड़ दिया जो परमेश्वर ने उन्हें दी थीं। यह इस्राएलियों द्वारा परमेश्वर के साथ अपने वाचा को तोड़ने का चित्रण था। इस्राएलियों ने अपने भयानक पाप के लिए कष्ट सहा। जो परमेश्वर के प्रति विश्वासघाती थे उन्हें लेवियों द्वारा मार डाला गया जो विश्वासयोग्य बने रहे। उन्हें परमेश्वर द्वारा भेजी गई महामारी में भी मारे गए। इसे जीवन की पुस्तक से उनके नाम मिटाए जाने के रूप में वर्णित किया गया था।

निर्गमन 33:1–34:35

परमेश्वर ने मूसा से घोषणा की कि वह कोमल, दयालु और अनुग्रहकारी हैं। वह विश्वासयोग्य और प्रेम से भरे हुए हैं। वह जलन रखने वाले भी है और नहीं चाहते कि लोग झूठे देवताओं की उपासना करें। परमेश्वर के खिलाफ पाप करने से दुख और सजा मिलती है। लेकिन परमेश्वर उन लोगों को माफ कर देते हैं जो पश्चाताप करते हैं और पाप से मुड़ जाते हैं। परमेश्वर ने इस्राएलियों के साथ जिस प्रकार व्यवहार किया, उससे उन्होंने अपने बारे में यह दिखाया। हालाँकि उन्होंने बछड़े की उपासना की थी फिर भी वह उनके प्रति विश्वासयोग्य रहे । उन्होंने उन्हें कनान देश की यात्रा जारी रखने के लिए कहा। वह अब भी उन्हें वह देश देंगे जिसे उन्होंने अब्राहम, इसहाक और याकूब को देने का वादा किया था। परमेश्वर मिलाप के तम्बू में उनके साथ उपस्थित रहे। वहां लोग परमेश्वर से सवाल पूछ सकते थे। परमेश्वर उस तम्बू में मूसा से ऐसे बात करते थे जैसे कोई मित्र से बात करता है। इससे पता चला कि मूसा परमेश्वर के कितने करीब थे। मूसा का चेहरा परमेश्वर की महिमा से चमक उठा जब उन्होंने बात की। उनका चेहरा तब भी चमक उठा जब वह फिर से सीनै पर्वत से नीचे आए। परमेश्वर ने मूसा को अपने बहुत करीब आने की अनुमति दी थी। मूसा ने परमेश्वर के बारे में जितना संभव था उतना देखा और जाना। और परमेश्वर ने मूसा को पत्थर की तख्तियों पर नई वाचा की प्रति दी।

निर्गमन 35:1–40:38

मूसा दूसरी बार पत्थर की तख़्तियाँ लेकर सीनै पर्वत से नीचे आये। उस समय इस्राएलियों ने सुनी और आज्ञा मानी। मूसा ने उन्हें छह दिन काम करना और सब्त के दिन आराम करना सिखाया। फिर पूरे समुदाय ने वह सब कुछ बनाने के लिए काम किया जो परमेश्वर ने उन्हें बनाने के लिए कहा था। लोगों ने जो उनके पास था उसमें से स्वतंत्र रूप से भेंट दी। बसलेल, ओहोलीआब और अन्य कुशल कारीगरों ने भेंटों का उपयोग किया। उन्होंने पवित्र तम्बू और उसमें सब कुछ बनाने के लिए उनका उपयोग किया। उन्होंने याजकों के वस्त्र भी बनाए। इस्राएलियों ने सब कुछ वैसा ही बनाया जैसा परमेश्वर ने मूसा को आदेश दिया था। फिर मूसा ने लोगों को आशीष दी। यह वैसा ही था जैसे जब परमेश्वर ने सृष्टि बनाई थी। वह अपनी बनाई चीज़ों से प्रसन्न थे और उन्होंने इसे आशीष दी (उत्पत्ति अध्याय 1) । जब पवित्र तम्बू तैयार हो गया, तो परमेश्वर की महिमा उसमें भर गई। इससे पता चला कि परमेश्वर तम्बू में इस्राएलियों के साथ उपस्थित थे। परमेश्वर ने बादल और आग के बीच से लोगों की अगुवाई करना जारी रखा।